International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मुंशी प्रेमचंद के कहानी साहित्य में चित्रित वृद्ध विमर्श

सौ. सावित्री सूर्यकांत मांढरे

M.A.(SET) M.P.Ed (SET), शोध छात्र : एस.पी.पी. यु पुणे

शोध संक्षेप :

आज के दिनों में बुजुर्गों की समस्या बड़ी समस्या हो गयी हैं , लोग बुजुर्ग माता पिता को एक तो घर में अकेले छोड़ देते हैं या उन्हें अनाथ आश्रम में छोड़ देते हैं I कई खबरे हम आज की तारीख में देख रहे हैं I जो बुजुर्ग अपने परिवार के लिए जिंदगी भर कष्ठ उठाते हैं उन्हें घर से बेदखल किया जाता हैं I अंध मा बाप को रेलवे स्टेशन पर अकेले छोड़ दिया जाता हैं I समाज में भी अकेले बेसहारा वृद्ध की अवहेलना की जाती हैं I उनके घर, जायदाद हथियाए जाते हैं I नजदीकी रिश्तेदार शुरुआत में तो बहुत सहानुभूति दिखाते हैं लेकिन एक बार जायदाद अपने नामपर करवाने के बाद उन्हें घर से निकाला जाता है , पेट भर खाने के लिए भी उन्हें तरसना पड़ता हैं I यह समस्या प्रेमचंद जी ने अपने कहानी साहित्य के द्वारा उजागर की हुई हैं I आज जो गहन समस्या बन गयी है उसे प्रेमचंद जी ने कई साल पहले ही अपने साहित्य का विषय बनाया था I वह एक यथार्थवादी साहित्यकार होने के कारन उनकी कहानीया हमें अपने घर ,आस पड़ोस की कहानीया लगती हैं I उनकी कहानियों से हमें वृद्ध विमर्श की झांकी साफ साफ दिखती हैं I इसी वृद्ध विमर्शका अभ्यास करने हेतु यह शोध आलेख सादर किया जा रहा हैं I

मूल शब्द : विमर्श , वृद्ध , कृषक , संतान हिन, विधवा

प्रस्तावना :

मुंशी प्रेमचंद जी का साहित्य कई विमर्शों से भरा है I उनकी कहानियों में कही स्त्री विमर्श है तो कही दलित विमर्श है तो कही किसान विमर्श I तो कही वृद्ध विमर्श भी दृष्टी गोचर होता हैं I इसमें से वृद्ध विमर्श एक ज्वलंत समस्या बन चूका हैं i ऐसे वृद्ध जो युवा पीढ़ी द्वारा स्थापित नवनिर्माण युग की बुनियाद हैं I

जिस तरह नयी और युवा पीढ़ी की जोरो पर चर्चा की जाती हैं उसी तरह वृद्ध विमर्श की भी चर्चा होना आजकल जरुरी हो गया I बुढापा जिसे आमतौर पर निष्क्रियता , शिथिलता की शारीरिक दशा समझकर बहुत काम की चीज नहीं समझा जाता I लेकिन बुजुर्ग बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के जीवन अनुभवो का कोश होते हैं I युवा पीढ़ी के प्रकाश का पुंज होते ये बुजुर्ग I बूढ़े बुजुर्गों से परामर्श का लाभ उठानेवाली ये युवा पीढ़ी ही नव निर्माण कर पाती हैं Iइसके विपरीत जो युवा पीढ़ी वृद्धों का परामर्श नहीं लेती वह विध्वंस की और चल पड़ती हैं I महाभारत और रामायण ऐसी ही विपरीत कथाए है , महाभारत के कौरव बुजुर्गो का कहा न मानकर युद्ध की और चल पड़ते हैं और खुद का विध्वंस कर लेते है , तो रामायण का राम वृद्ध पिता की आज्ञा मानकर वनवास को अपनाता हैं I इसी रामकथा का श्रवण कुमार वृद्ध माता पिता की सेवा करके आदर्श पुत्र होने का सम्मान पाता हैं I

प्रेमचंद के कथा साहित्य के कई पहलु रहे हैं , जिनमे से एक हैं उनके साहित्यद्वारा प्रदर्शित किया गया वृद्ध विमर्श I आज समाज में बुजुर्गों की जो दयनीय स्थिति हो गयी हैं , उसे समझने के लिए हमें उसके जड़ तक जाना होगा I इस आनेवाली समय की झांकी प्रेमचंद जी अपने कहानियों में पहले ही प्रस्तुत की थी I प्रेमचंद की तीन सौ कहानियों में से अधिकांश कहानियों में वयोवृद्ध पात्र और उनकी समस्याए दिखाई देती हैं I इन कहानियों में से कुछ ही कहानिया यहाँ उदहारण के तौर पर ली गयी हैं I जैसे बेटों वाली विधवा , पंचपरमेश्वर, बूढी काकी ,विध्वंस आदिI

समस्या और उद्देश्य :

इस शोध पत्र में वृद्धो की समस्या को लक्ष्य करते हुए प्रेमचंद जी के कथा साहित्य में वृद्धों की समस्या को लेकर कई कहानिया लिखी उन प्रमुख कहानी यो में उधृत वृद्धो की स्थिति से अवगत कराना इस शोध पत्र का प्रमुख उद्धिष्ट है I

सामग्री संकलन और विश्लेषण विधि :

यह शोधपत्र प्रेमचंद के कहानी साहित्य में चित्रित वृद्ध विमर्श पर केन्द्रित रहकर इनमे चित्रित वृद्धों की परिवार में हो रही उपेक्षा , संतानहीन वृद्ध महिलाओं की स्थिति , समाज में होने वाली वृद्ध महिलाओं की प्रताड़ना आदि को दर्शाता हैं I इस से संबंधित सामग्रीयों का संकलन पुस्तकालय ,तथा इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री से किया गया I इसके साथ ही इसकी प्रमाणिकता के लिए द्वितीय विधि के रूप में सन्दर्भों का उपयोग किया गया हैं Iहिंदी समय में संकलित प्रेमचंद के उपन्यास ,कहानियों का प्रयोग किया गया हैं I

विषय प्रवेश :

उत्तर आधुनिक समय में अब लोगो की दृष्टी हाशिए के समुदायों पर पड़ी है , स्त्री ,दलित , आदिवासी , किसान इनकी तरह अभी वृद्धों की तरफ भी ध्यान केन्द्रित हो रहा हैं I इसका परिणाम ये हुआ की वृद्धावस्था विमर्श का उदय हुआ I १९७० में प्रकाशित सिमोन-द-बुआ की कृति “ला विएलेस्से “(फ्रेंच कृति) जिसका अंग्रेजी अनुवाद पेट्रिक ओ ब्रेन ने १९७७ में ‘ओल्ड एज’ नाम से किया हैं I हिंदी में चंद्रमौलेश्वर प्रसाद ने इस कृति का सार संक्षेप “वृद्ध वस्था विमर्श “इस नाम से प्रस्तुत किया हैं I

प्रेमचंद जी का व्यक्तित्व:

मुंशी प्रेमचंद का हिंदी कथा साहित्य में तब आगमन हुआ जब कथा साहित्य शैशवावस्था में था I उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को अपने प्रतिभा के बल पर और अपनी लेखन की स्वाभाविक शैली के आधार पर कथा साहित्य को उच्च कोटि पर पहुँचाया I जिस कारण उन्हें अपने समय का सर्वश्रेष्ट कथाकार माना जाता हैं I उनका जन्म ३१ जुलाई १८८० में एक साधारण परिवार में ही हुआ था I परिवार के भरण पोषण की जिम्मेदारी कम उम्र से ही उन्हें अपने कंधे पर उठानी पड़ी I अध्यापक की नौकरी के सिलसिले में उनको बनारस , गोरखपुर , बस्ती , कानपूर जैसे स्थानों पर रहने के कारन उन्हें भारतीय ग्रामों की दुर्दशा एवं कृषकों के दीन- हिन् असहाय दशा से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ I

प्रेमचन्द जी की कहानियों में वृद्ध विमर्श :

मुंशी प्रेमचंद की कहानिया वृद्धों की स्थिति से रुब –रु कराती हैं I समाज की उस व्यवस्था से पर्दा उठती हैं जिसमे लोग अपनी स्वार्थपरता के लिए वृद्धों की अवहेलना करते हैं I युवावस्था वृद्धावस्था से अनभिज्ञ होती हैं I अत: प्रेमचंद अपनी इन कहानियों के माध्यम से वृद्धों की तत्कालीन स्थितियों को दर्शाकर युवापीढ़ी को अवगत करना चाहते हैं की युवा चाहे उन्हें लाख बेकार समझे बुजुर्ग हमेशा उनका साथ देते हैं तथा उन्हें मार्गदर्शन करना चाहते हैं I वृद्धावस्था , बाल्यावस्था का ही पुनरागमन होता हैं Iइन अवस्थाओं में जिव्हा स्वाद की अभिलाषा एवं परिवार की उपेक्षा 'बूढी काकी ' कहानी की प्रमुख पात्र बूढी काकी को अपनी जठराग्नि को शांत करने के लिए जुठे पत्तल से खाने तक को विवश कर देती हैं I '

विध्वंस' कहानी के माध्यम से जमींदारी व्यवस्था में गरीब दलित एवं शोषित समाजकी एक संतानहीन , विधवा वृद्ध स्त्री पात्र भुनगी की प्रताड़ना को प्रेमचंद जी ने प्रस्तुत किया हैंI सामाजिक मानसिकता काफी हद तक रूढ़ होती हैं , जिसमे सुधार की आवश्यकता हैं I लोग उचित व्यवस्था की ओर कम ध्यान देकर परंपरागत विचारों को ही अधिक प्रश्रय देते हैं I इसी मानसिकता के बीच दुर्भावनाओं का बीजारोपण होता हैं I जो सामाजिक व्यवस्था को कलंकित करती हैं I

प्रेमचंद द्वारा रचित ' बेटोंवाली विधवा ' शीर्षक कहानी इसका अच्छा उदहारण हैं I जहाँ 'फूलमती ' नामक स्त्री पात्र को प्रेमचंद ने इन्ही संकीर्ण सामाजिक मानसिकता का शिकार होते दर्शाया हैं I जिसमे वैधव्य को प्राप्त स्त्री को अस्तित्वहीन मानने की प्रथा प्रचलित हैं I ऐसी स्त्रियों को न सिर्फ परिवार के सदस्य बल्कि सामाजिक लोग भी उपेक्षा की दृष्टी से देखने लगते हैं I क्षणभर में सारे अधिकार प्रतिष्ठा छीन जाती हैं I' पंचपरमेश्वर' कहानी में जुम्मन शेख की 'खाला ' के अधिकारों का हनन होता हैं I पहले तो स्त्रियों को शक्तिहीन माना गया हैं I उसमे बुढ़ापा , इसके कारन बूढी खाला को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता हैं I एक सौ वर्ष पूर्व लिखी कहानी 'पंच परमेश्वर ' (१९१६) में खाला अपने हक़ के लिए आवाज उठती हैं , जो आज के सन्दर्भ में प्रेरणादायी हैं I प्रेमचंद जी ने बूढी काकी , बेटोवाली विधवा , पंच परमेश्वर ,विध्वंस आदि में वृद्धों की मनोदशा को मनोविश्लेषनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया हैं I

प्रेमचंद ने वृद्धों की यथार्थ एवं मार्मिक स्थिति को दर्शाते हुए युवा पीढ़ी को आइना दिखाने का प्रयास किया हैं I इन कहानियों के अतिरिक्त प्रेमचंद ने अपनी अन्य कहानिया ईदगाह , अलग्योझा , नमक का दरोगा आदि में भी वृद्धों के विविध स्वरुप दिखाए हैं I यह कहानिया आज की युवा पीढ़ी को जाने अनजाने अपने कर्त्तव्य से च्युत होने की स्थिति से ही अवगत नहीं कराती वह हमारी अंतरात्मा को झकझोरते हुए यह एहसास कराती हैं की बुजुर्ग सदैव हमारे लिए ही सोचते हैं और हम अज्ञानवश एवं स्वार्थवश उनकी अवहेलना करते हैं I

निष्कर्ष :

प्रेमचंद जी ने अपने कहानियों के माध्यम से युवा पीढ़ी का ध्यान बुजुर्गो की उन सभी समस्याओं कि और आकृष्ठ करना चाहा हैं जिस और वे अपनी व्यस्तता , स्वार्थपरता एवं कर्तव्यहीनता के कारन नहीं दे पाते I युवापीढ़ी ही समाज के सुधारक एवं भविष्य के निर्माता होते हैं I ऐसे में यदि वे विवेकशून्य हो जाए तो सामाजिक पतन स्वाभाविक हैं I अत: आज की युवा पीढ़ी को अपने

अन्दर इन आदर्शों को प्रश्रय देना चाहिए I जिससे समाज में वृद्धाश्रम खोलने की जरुरत ना पड़े I सभी बुजुर्ग सम्मान एवं अधिकार के साथ अपने घरो में रह सके I

उपसंहार:

आज के समाज में वृद्ध विमर्श एक गहन समस्या बन गया हैं I आज बुजर्गो की दयनीय स्थिति बन गयी हैं I परिवार गरीब हो या आमिर हो वृद्ध की स्थिति आज कोने में पड़ी पुराने फर्नीचर की तरह हो गयी हैं I जिन माँ बाप ने पाल पोसकर बड़ा किया उन्ही माता पिता की घर में अवहेलना की जाती हैं I शक्तिहीन होने के कारन उन्हें अपने काम भी करने में दिक्कते होती हैं ऐसे में घर के कामो में वो क्या मदद करेंगे I ऐसे बेकार वृद्ध माता पिता को संभालना आज के बच्चों को बोझ लगने लगा हैं I सौ में से सत्तर प्रतिशत घरों में आज यह स्थिति बन गयी हैं Iलेकिन उनका होना भी कितना महत्वपूर्ण है यह समझने की बुद्धि उनके पास कहा हैं I आज अगर बुजुर्ग घर में होते हैं तो बच्चे अच्छे संस्कार अपने आप सिख जाते हैं , माता पिता के नौकरी करने कारन बच्चे बिलकुल अकेले पड़ जाते हैं , उन्हें दादा-दादी का साथ मिलता हैं I बच्चों को दिनभरमाँ बाप घर में नहीं हैं इस बात की कमी महसूस नहीं होती I क्या अच्छा क्या बुरा यह सिखाने के लिए मा बाप के पास वक्त कहाँ हैं ? दादा-दादी अगर घर में हैं तो वह उन्हें सही गलत की पहचान कराते हैं I और बच्चे भटक नहीं जाते , उनपर अच्छे संस्कार अपने आप हो जाते हैं I इसलिए आज घर में बुजुर्ग का होना भी महत्वपूर्ण हैं I उन्हें बोझ समझने के बजाय अपने परिवार का हिस्सा मानकर उनकी अहमियत समझे Iप्रेमचंद जी ने पूरी संवेदना के साथ बुजुर्गों के जीवन को देखा उनकी समस्याओं को जाना और पूरी इमानदारी से हमारे सामने प्रस्तुत किया हैंI

संदर्भ सूचि:

1. भारती मेधा , सलोनीप्रिया, निर्मला दिग्गी , कुमारी मनीषा , शोध आलेख :प्रेमचंद के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श ,एक्स्प्लोर जर्नल ओफ़ रिसर्च –ISSN 2278 – 0297
2. प्रेमचंद,मानसरोवर भाग १ , हिंदी समय.com
3. प्रेमचंद,मानसरोवर भाग ७ , हिंदी समय.com
4. प्रेमचंद,मानसरोवर भाग ८ , हिंदी समय.com
5. जाधव नीता बाबु , शोध आलेख –मुंशी प्रेमचंद के समय अथवा समाज में वृद्ध जीवन (कहानियों के संदर्भ में) , संगमISSN : 2321 – 8037
6. प्रेमचंद , ‘बूढी काकी’ , हिंदी समय.com
7. गुर्रम कोंडा नीरजा , वृद्धावस्था विमर्श और हिंदी कहानी , आलेख – सागरिका पत्रिका ,१३अगस्त २०१७